कौस्तुभ बीजमन्त्र

जन्माष्टमी महोत्सव के उपलक्ष्य में

गीता शर्मा द्वारा गाया गया।

© ℗ २०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।
इसे कॉपी न करें, रिकॉर्ड न करें और न ही इसका वितरण करें।

कौस्तुभ बीजमन्त्र

ॐ ठं चं भं यं कौस्तुभाय नमः।

ॐ ठं चं भं यं।
भगवान श्रीविष्णु के कण्ठ में शोभायमान
देदीप्यमान मणि, कौस्तुभ को नमन।

अमी बन्सल द्वारा लिखित परिचय

पुराणों तथा पंचरात्र ग्रन्थों के अनुसार कौस्तुभ, सम्पूर्ण विश्व में सर्वाधिक देदीप्यमान मणि है। कौस्तुभ मणि, उन चौदह प्रमुख रत्नों में से एक है जो समुद्र-मन्थन के समय क्षीरसागर से उत्पन्न हुए थे। जब सागर की विशाल जलराशि से यह रत्न प्रकट हुआ, तब सम्पूर्ण संसार पर प्रकाश-तरंगें छा गईं। भगवान शिव ने सभी उपस्थित जनों के सम्मुख यह घोषित किया कि यह रत्न, भगवान श्रीविष्णु के लिए है, क्योंकि एकमात्र वे ही हैं जो इस परम तेजस्वी प्रकाशपुंज को धारण करने योग्य हैं। वे ही हैं जो इसकी मनोरम सुन्दरता से प्रभावित हुए बिना या इसमें अनुरक्त हुए बिना इसे धारण

कर सकते हैं। कालान्तर में, भगवान श्रीविष्णु के अवतार, भगवान श्रीकृष्ण ने भी कौस्तुभ मणि को अपने कण्ठ में धारण किया था।

कौस्तुभ मणि, इस ब्रह्माण्ड की सर्वव्यापी शक्ति, परम चिति की तेजस्विता की प्रतीक है। कौस्तुभ मणि के वैभव के रहस्य का वर्णन करते हुए श्रीमद्भागवतम् में कहा गया है :

> कौस्तुभव्यपदेशेन स्वात्मज्योतिर्बिभर्यजः।
>
> **अजन्मे भगवान श्रीविष्णु, वह कौस्तुभ मणि धारण करते हैं जो उनकी ज्योतिर्मय 'स्व-आत्मा' की प्रतीक है।**[१]

कौस्तुभ मणि भगवान श्रीविष्णु के वक्षस्थल को सुशोभित करती है, वे श्रीविष्णु जो इस सृष्टि की पालक शक्ति हैं। भगवान की आत्मज्योति होने के कारण, यह इस संसार की सर्वव्यापी प्राणशक्ति की दीप्ति की प्रतीक है। समस्त मणियों में सर्वाधिक द्युतिमान, यह सूर्य के समान प्रकाशमान है और समस्त बहुमूल्य रत्नों के विविध रंग व गुण इसमें समाहित हैं।

भगवान श्रीविष्णु की उपस्थिति व उनके आशीर्वादों का तथा परम आत्मा के प्रकाश का आवाहन करने हेतु कौस्तुभ मन्त्र का उच्चारण किया जाता है। कौस्तुभ मन्त्र में बीजमन्त्रों का एक समुच्चय है।

आइए, हम और ध्यान से देखें कि बीजमन्त्र क्या होता है। संस्कृत शब्द 'बीज' का अर्थ है, मूल या प्रारम्भ। अतः बीजमन्त्र एक 'मूल मन्त्र' या एक 'मूल ध्वनि' है। बीजमन्त्र, आधारभूत नाद मन्त्र हैं; ये एकाक्षरी होते हैं व इनका समापन विशिष्ट रूप से एक अनुस्वार के साथ होता है जिसे देवनागरी अक्षर के ऊपर एक बिन्दु के रूप में दर्शाया जाता है। बीजमन्त्र अनेक हैं और उनमें से हर एक में एक प्रबल स्पन्दनात्मक गुण होता है। आदि नाद 'ॐ' समस्त बीजमन्त्रों का उद्गम है।

बीजमन्त्र अत्यधिक शक्तिशाली नाद या ध्वनियाँ होती हैं जो मूलतः प्राचीन काल में ऋषियों को अपने ध्यान में सुनाई दी थीं। ये बीजमन्त्र किसी विशिष्ट दैवत की शक्ति व ऊर्जा को दर्शाते, धारण करते व उनका आवाहन करते हैं। जब आप किसी बीजमन्त्र का उच्चारण करते हैं या उसका गान करते हैं या उस पर ध्यान करते हैं, तब आप उस दैवत की शक्ति व आशीर्वादों को जाग्रत तथा आमन्त्रित करते हैं जिसका वह द्योतक है।

बीजमन्त्र का जप या गान या उस पर ध्यान, एकल ध्वनि के रूप में या किसी दीर्घ मन्त्र के एक अंश के रूप में किया जा सकता है। कौस्तुभ मन्त्र में विभिन्न बीजमन्त्र हैं। कौस्तुभ मन्त्र, गरुडपुराण के

उन मन्त्रों में से एक है जो भगवान श्रीविष्णु की शक्ति का आवाहन उनके पवित्र प्रतीकों के माध्यम से करते हैं।

कौस्तुभ मन्त्र यह है :

ॐ ठं चं भं यं कौस्तुभाय नमः।

ॐ ठं चं भं यं
कौस्तुभ को नमन।[२]

'ॐ' आदि बीजमन्त्र है। ठं, चं, भं और यं की ध्वनियाँ, बीजमन्त्रों का एक विशिष्ट समुच्चय है। इनका एक-साथ उच्चारण करने पर ये कौस्तुभ की शक्ति का आवाहन तथा सम्मान करती हैं।

भगवान श्रीविष्णु की आत्मज्योति, कौस्तुभ का सम्मान करने वाला यह मन्त्र, इसका जप करने वाले को परम तेज, सौभाग्य, प्रचुरता और शक्ति प्रदान करता है। यह मन को शान्त करता है व इन्द्रियों का शमन करता है और किसी व्यक्ति में बसे डर, क्रोध व लोभ जैसी नकारात्मकताओं को दूर करता है। आश्चर्यजनक सामर्थ्य से युक्त इस मन्त्र में वह शक्ति है कि यह मनुष्य के हृदय को चिति के परम प्रकाश के प्रति खोल देता है।

---

[१] श्रीमद्भागवतम् १२.११.१०।
[२] गरुडपुराण, आचारकाण्ड, अध्याय ७, श्लोक ६।

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।